जनवरी-मार्च, 2025

दिनांक – 21 मार्च, 2025

हिन्दी कार्यशाला रिपोर्ट

शीर्षक - **'हिन्दी की वैश्विक प्रगति में ई-तकनीक का महत्व'**

दिनांक 21 मार्च, 2025 को राजभाषा प्रकोष्ठ, झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा **'हिन्दी की वैश्विक प्रगति में ई-तकनीक का महत्व'** विषय पर चतुर्थ तिमाही हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। हिंदी कार्यशाला के संचालक एवं मुख्य वक्ता **श्री मधुरागी श्रीवास्तव, हिंदी अधिकारी, झा.के.वि.** रहें। उन्होंने **'हिन्दी की वैश्विक प्रगति में ई-तकनीक का महत्व'** के संदर्भ में कहा कि जनतांत्रिक आधार पर हिंदी विश्व भाषा है क्योंकि उसके बोलने समझने वालों की संख्या संसार में तीसरी है। विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल के लगभग दो करोड़ लोग हिंदी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं। एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिंदी एशियाई भाषाओं से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है। हिंदी का किसी देशी या विदेशी भाषा से कोई विरोध नहीं है। यही कारण है कि आज हिंदी का शब्दकोश विश्व का सबसे बड़ा भाषिक शब्दकोश है। हिंदी स्वयं में अपने भीतर एक अन्तरराष्ट्रीय जगत छिपाए हुए हैं। आर्य, द्रविड़, आदिवासी, स्पेनी, पुर्तगाली, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी अरबी, फारसी, चीनी, जापानी सारे संसार की भाषाओं के शब्द इसकी अन्तरराष्ट्रीय मैत्री एवं वसुधैव कुटुम्बकम वाली प्रवृत्ति को उजागर करते हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने और धारा 3 (3) का अनुपालन सुनिश्चित करने की अपील की। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले 14 दस्तावेजों को अनिवार्य रूप से द्विभाषी बनाने पर जोर देते हुए हिंदी अधिकारी महोदय ने कहा कि हिंदी भाषा का प्रयोग केवल दैनिक बोलचाल के लिए ही नहीं बल्कि लिखित रूप में भी इसका लगातार अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। श्री मधुरागी श्रीवास्तव ने अपने व्याख्यान में टिप्पण एवं प्रारूपण के संबंध में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदान की। उन्होंने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग हेतु विभिन्न ई-टूल्स के बारे में जानकारी दी। उन्होंने **कंठस्थ अनुवाद प्रणाली, मंत्र-राजभाषा, वाचांतर** एवं **लीला एप** के बुनियादी प्रयोग एवं लाभ के बारे में विस्तार से व्याख्या की।

विशेष वक्ता के रूप में विश्वविद्यालय के उप कुलसचिव-I श्री अब्दुल हलीम ने भी संस्थान के कर्मचारियों को हिंदी में अधिक से अधिक नोटिंग एवं ड्राफिंट के लिए प्रोत्साहित किया। इस मौके पर श्री बी.बी.मिश्रा, परीक्षा नियंत्रक, ले. कमा.उज्ज्वल कुमार, (सेवा.नि.), उप कुलसचिव-II संदीप कुमार, निरंजन कुमार राय, शिकारी मुंडा, महेंद्र रजवार सोमनाथ दत्ता, रविकांत, शेखर, जेउर रहमान अंसारी, अभ्युदय अनुराग, नितिन, भुवनेश्वर, विकास आनंद, पुष्पा कुमारी, आदि के साथ-साथ विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम के सफल संचालन पर श्री बी.बी.मिश्रा, परीक्षा नियंत्रक, उप कुलसचिव-I तथा उप कुलसचिव-II ने हिंदी अधिकारी श्री मधुरागी श्रीवास्तव की सराहना की। कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन सहायक कुलसचिव नफीस अहमद खान ने किया।

वैश्विक प्रगति में ई-तकनीक का महत्व
तिमाही हिंदी कार्यशाला -2024-25